शास्त्री-प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

जयद्रथ-वध - पंचम सर्ग
कवि - मैथिलीशरण गुप्त

"आगे न अर्जुन बढ़ सके आचार्य-बल वातूल से;
कल्लोल लोल-पयोधि के ज्यों बढ़ न सकते कूल से।
बोले वचन तब पार्थ से हरि- व्यर्थ यह संग्राम है
है काल थोड़ा और करना बहुत भारी काम है।"

भावार्थ

प्रस्तुत पंक्तियाँ पंचम सर्ग से उद्धृत है। पाण्डवों और कौरवों की सेना में घमासान युद्ध चल रहा है। गुरु द्रोणाचार्य ने आज के युद्ध में अर्जुन को आगे बढ़ने से रोक रहे हैं। अर्जुन गुरुद्रोणाचार्य के भावों को भाँप कर कृष्ण से कहते हैं कि आज मेरे लिए युद्ध में आगे बढ़ना कठिन प्रतीत हो रहा है।

कवि कहना चाहता है कि अर्जुन आचार्य द्रोणाचार्य की शक्ति रूपी बवंडर के कारण आगे बढ़ने में अपने को असमर्थ महसूस कर रहे हैं। जिस प्रकार किनारे पर उत्पन्न होने वाली लहरें वहीं उत्पन्न होकर वहीं नष्ट हो जाती हैं और आगे नहीं बढ़ पाती हैं, ठीक उसी प्रकार अर्जुन की शक्ति भी वहीं नष्ट हो जा रही है आगे नहीं बढ़ पाती है। तब भगवान ने अर्जुन से कहा कि "यह युद्ध व्यर्थ है। इस समय बहुत थोड़ा समय है और बहुत कठिन काम करना शेष है।

आचार्य द्रोणाचार्य आज पूर्ण वेग से अर्जुन के साथ युद्ध कर रहे हैं और उनको रोके हुए भी हैं। इस बात को भगवान श्री समझ जाते हैं और अर्जुन से कहते हैं कि इस समय अब यहाँ सामना करना युद्धनीति के विरुद्ध है। समय कम है और कार्य बड़ा करना है। अतः यहाँ से हट जाना ही उचित है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
राज० संस्कृत महाविद्यालय, धौलपुर

20/09/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०- पत्र

दिगंत- भाग - 2 गद्य भाग

शीर्षक - सम्पूर्ण क्रान्ति

लेखक - जय प्रकाश नारायण

प्रश्न:- (1) सप्रसंग व्याख्या -

"अगर कोई डेमोक्रेसी का दुश्मन है, तो वे लोग दुश्मन हैं, जो जनता के कार्यक्रमों में बाधा डालते हैं, उनकी गिरफ्तारियाँ करते हैं, उन पर लाठी चलाते हैं, गोलियाँ चलाते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के 'सम्पूर्ण क्रान्ति' शीर्षक से ली गई है। इसके लेखक समाजवादी चिंतक लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी हैं। उपरोक्त पंक्तियों में लेखक ने लोकतंत्र के दुश्मनों का वर्णन किया है।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की सभा अपार भीड़ इकट्ठा हुई थी। लेकिन बहुत लोगों को ट्रेनों में रोका गया, बसों से उतारा गया, जेलों में डाला गया। सरकार जनता से घबड़ा गई थी। जय प्रकाश जी का कहना था कि लोकतंत्र जनता का शासन कहलाता है। पटना बिहार के लोगों की राजधानी है। यह देश भी जनता का है। सरकार लोकतंत्र की दुहाई देती है। लेकिन यही लोग लोकतंत्र के दुश्मन हैं। पुलिस एवं प्रशासन आम्तिसय जनता पर लाठियाँ चलाते हैं, गोलियाँ चलाते हैं साथ ही साथ कार्य-क्रमों में बाधा डालते हैं।

जनता इसे बदलना चाहती है। ऐसी डेमोक्रेसी यहाँ की जनता को नहीं चाहिए, जो जनता की भावनाओं को ही कुचल दे। इसें संविधान के अनुरूप लोकतंत्र चाहिए। देश के छात्र एवं युवा इसका नेतृत्व करेंगे।

प्रश्न (2)

"व्यक्ति से नहीं हमें तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धान्तों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है।"

प्रस्तुत कथन हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के सम्पूर्ण क्रान्ति शीर्षक से ली गई है। यह जयप्रकाश नारायण जी के भाषण के अंश हैं।

जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में वर्तमान सरकार

शेष आगे-

के विरुद्ध जनआन्दोलन चरम पर था। इसी समय जय-प्रकाश जी के कुछ मित्र चाहते थे कि तत्कालीन केन्द्र सरकार और जयप्रकाश जी में मेल-मिलाप हो जाए। इसी प्रसंग में जयप्रकाशनारायण ने कहा है कि उनका किसी व्यक्ति से झगड़ा नहीं है। चाहे वह इन्दिरा जी हों या कोई और, उन्हें तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धान्तों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है। जो कार्य गलत होंगे, जो नीति गलत होगी, जो सिद्धान्त गलत होंगे- चाहे वह कोई भी करे- वे विरोध करेंगे।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
य०ज०सं०म०वि० सुखसेना पूर्णियाँ
20।09।20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न:- 'पथिक' की हत्या के उपरांत की स्थितियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- कवि रामनरेश त्रिपाठी ने पथिक की हत्या के बाद की स्थितियों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है। कवि का कहना है कि मानव जीवन नश्वर है। यहाँ अर्थात् इस संसार में कुछ भी शाश्वत नहीं है। राजा, रंग, मानी, अभिमानी सबों को एक दिन मृत्यु प्राप्त करनी ही है। यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जो सब दिन यहाँ रहने के लिए आया है।

यहाँ न तो कोई अकिंचन ही बचा न अभिमानी राजा ही बचा है। बड़े-बड़े विद्वान, मूर्ख और सज्जन अन्ततः सभी विदा हो गये। उनलोगों की केवल एक ही वस्तु यहाँ रह गई, वह है उनकी अच्छी-बुरी चर्चाएँ। वे कहाँ गए, किस गुफा में अदृश्य हो गये यह कोई नहीं कह सकता है। उनलोगों ने कभी कोई संदेश हमें नहीं भेजा है। मृत्यु सबसे बड़ी चीज है, क्योंकि इसमें सब कुछ नष्ट हो जाता है।

'पथिक' भी अपने शरीर को त्याग कर न जाने किस अज्ञात देश का वासी हो गया, कौन कह सकता है। जिस दिन से वह गया, सम्पूर्ण देश में उदासी छाई हुई है। लोग अपनी पीड़ा समझते हैं, किन्तु व्यक्त नहीं कर सकते हैं। यह उनकी मजबूरी है। लोग ऊपरी मन से सभी काम करते थे, किन्तु कहीं भी आन्तरिक ~~प्रसन्न~~ता प्रसन्नता नहीं थी। उन्हें अन्यायी और अत्याचारी राजा का डर हमेशा बना रहता था। यही कारण है कि वे अपनी व्यथा को भीतर ही झेलते थे।

डॉ० देव चरण प्रसाद

एसो० प्रो० हिन्दी

रा० उ० सं० म० वि० दुखसेना, पूर्णियाँ